www.samikshainstitute.com

THE MARKS OF TRUST

SAMIKSHA SIGN OF SUCCESS

समीक्षा इंस्टीट्यूट

A Center of Excellence for Knowledge, Skills & Aptitude

QTS - MPPSC MAINS 2019

Test ID : 09 Date : 07-09-2020

TOTAL MARKS-150 | SUBJECT: Full geography | TIME 01:30 Hrs.

Model answer key

Student Name

Candidate's Mobile No.

Student Name

Invigilator Signature

JOIN US

98262-28312, 90745-85746, 77708-38222

Follow us on : | Subscribe YouTube Channel

Follow us on : | Subscribe YouTube Channel

Direction –

1. प्रश्न क्रमांक 01 में कुल 15 अत्यन्त लघु उत्तर स्वरूप के प्रश्न दिये गये है। प्रत्येक उत्तर एक या दो पंक्तियों में देना होगा। सभी प्रश्न A से O तक अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न 03 अंक का है।

15*3= 45

(A) मध्यप्रदेश के बुंदेलखण्ड पठार की अवस्थिति।

उत्तर– बुंदेलखण्ड का पठार मध्यप्रदेश के उत्तरमध्य में स्थित है। इसके दक्षिण-पश्चिम में मालवा का पठार, पश्चिम में मध्य भारत का पठार, उत्तर में यमुना का जलोढ़ मैदान तथा दक्षिण-पूर्व में पन्ना और अजयगढ़ की पहाड़ियां है।

(B) भारत में मैग्नीज के मुख्य उत्पादक राज्यों को बतायें।

उत्तर– भारत के प्रमुख मैग्नीज उत्पादक राज्य–

मध्यप्रदेश(प्रथम स्थान)
महाराष्ट्र(द्वितीय स्थान)
उड़ीसा(तृतीय स्थान)

(C) मध्यप्रदेश में नहर सिंचाई के विकास के प्रतिकूल कारक क्या है?

उत्तर– मध्यप्रदेश में नहर सिंचाई के विकास के प्रतिकूल कारक निम्न है–

1. मध्यप्रदेश का भौगोलिक रूप से पठारी संरचना का होना।
2. सिंचाई की पर्याप्त अधोसंरचना का अभाव।
3. जल संरक्षण की प्रभावी नीतियों का अभाव।

(D) चंबल नदी ।

उत्तर–

1. इंदौर के महू के निकट जानापाव की पहाड़ी से उद्गम।
2. कुल लम्बाई-965 किलोमीटर।
3. प्रमुख बाँध- गांधी सागर(मंदसौर), जवाहर सागर(कोटा), राणा प्रताप सागर(चित्तौडगढ़)

(E) शस्य गहनता।

उत्तर– शस्य गहनता से तात्पर्य किसी वर्ष का कुल बोया गया फसल क्षेत्र व उसी वर्ष का शुद्ध बोया गया फसल क्षेत्र के अनुपात से है। इसे प्रतिशत में व्यक्त करते है। यह प्रति हेक्टेयर या प्रति व्यक्ति फसल के उत्पादन को संदर्भित करता है।

(F) विपत्ति व आपदा में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर–

विपत्ति– विपत्ति वे प्राकृतिक घटनाऐं है, जो किसी भी तंत्र को व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं तथा निर्जन क्षेत्रों में उत्पन्न होती है।

आपदा– आपदा प्राकृतिक अथवा मानवीय कारणों से उत्पन्न, वे चरम घटनायें होती है, जो मानव को प्रभावित करती है। जब विपत्ति मानव आवासित क्षेत्र में आता है, तब आपदा का रूप ले लेता है, जैसे- उष्णकटिबंधीय चक्रवात, भूकंप और ज्वालामुखी।

(G) झूम खेती से क्या आशय है?

उत्तर- कुछ आदिवासी प्रजाति द्वारा जंगली तथा पर्वतीय क्षेत्रों में जंगलों की कटाई कर वहां पर कुछ समय तक खेती करना तथा इसके बाद अन्य स्थान पर स्थानांतरित होकर वहां भी कृषि करना, झूम खेती कहलाता है। इसे जलाना खेती तथा बुश फेलो खेती भी कहते है। उदाहरण स्वरूप नागालैंड में।

(H) आम्र वर्षा।

उत्तर–

1. मानसून पूर्व वर्षा/ग्रीष्मकालीन वर्षा/अप्रैल वर्षा।
2. केरल और कर्नाटक के तटीय इलाकों में प्रभावी।
3. आम पकने में मदद होने के कारण आम्र वर्षा कहते है।

(I) खादर।

उत्तर–

1. यह क्षेत्र नवीन जलोढ़ के जमा होने से बना है।
2. यह वह भू-भाग है जहां नदियों के बाढ़ का पानी प्रति वर्ष पहुंचता रहता है।
3. इसकी उपजाऊ शक्ति अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अत्यधिक होती है।

(J) सहरिया।

उत्तर-

1. ग्वालियर, शिवपुरी, श्योपुर व दतिया आदि जिलों की विशेष पिछड़ी जनजाति।
2. आजीविका हेतु जड़ी-बूटियों पर निर्भर।
3. इनकी बसावट को सहराना कहते है।

(K) कंचनजंगा।

उत्तर-

1. यह भारत की सर्वोच्च चोटी(8586मी) है।
2. वृहद हिमालय का भाग।
3. नेपाल में अवस्थित ।

(L) भोपाल गैस त्रासदी।

उत्तर-

1. 2-3 दिसम्बर, 1984 को घटित औद्योगिक दुर्घटना।
2. पेस्टीसाइड़ बनाने वाली कंपनी यूनियन कार्बाइड़ की फैक्ट्री से जहरीली गैस मिथाइल आइसो सायनेट(MIC) का रिसाव।
3. लगभग 2 लाख लोग प्रभावित व लगभग 3800 लोगों की मृत्यु।

(M) तापीय प्रतिलोमन।

उत्तर- सामान्यतः ऊँचाई पर जाने पर तापमान में गिरावट (प्रति 1 किलोमीटर की ऊँचाई पर 6.5^0C की कमी) गिरावट आती है, किन्तु जब कभी तापमान का नियम उलट जाता है, तो इसे तापमान का प्रतिलोमन कहते है।

(N) चीखती षाठा।

उत्तर-

1. दक्षिणी गोलार्द्ध में 60^0 अक्षांश पर पछुआ पवनों का तेज प्रवाह।
2. दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थलखण्ड की कमी के कारण घर्षण के अभाव में अत्यधिक गति से प्रवाह।

3. यह अत्यधिक विनाशकारी होती है।

(O) सागर एवं महासागर में अंतर बताइयें।

उत्तर-

क्र.	सागर	महासागर
1.	इनका आकार छोटा होता है।	इनका आकार वृहद होता है।
2.	यह उथले एवं कम गहरे होते है।	यह अधिक गहरे होते है।
3.	सबसे बड़ा सागर भूमध्य सागर है।	सबसे बड़ा महासागर प्रशांत महासागर है।

2. प्रश्न क्रमांक 2 में कुल 12 लघु उत्तर स्वरूप के प्रश्न दिये गये है। प्रत्येक उत्तर लगभग 100 शब्दों में देना है। कुल 10 प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न 6 अंको का है। 10*6 = 60

(A) मध्यप्रदेश के ऊर्जा और खनिज संसाधनों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- ऊर्जा एवं खनिज संसाधन किसी भी देश या राज्य की अर्थव्यवस्था का आवश्यक घटक होते है।

मध्यप्रदेश में ऊर्जा-

1. परम्परागत ऊर्जा संसाधन
2. गैर-परम्परागत ऊर्जा संसाधन

परम्परागत ऊर्जा संसाधनों में कोयला, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस के साथ-साथ गैर-परम्परागत ऊर्जा संसाधनों जैसे- सौर, पवन, जैव तथा भू-तापीय ऊर्जा आदि।

सोहागपुर, सिंगरौली, सीधी, शाहपुर-तवा कोयला क्षेत्र प्रमुख है। गैर-परम्परागत स्त्रोतों में सौर ऊर्जा, वायोमास पवन ऊर्जा आदि प्रमुख है। सौर ऊर्जा को प्रोत्साहन एवं विनियमन करने हेतु नवीन सौर ऊर्जा नीति 2012 में लागू की गई। कस्तूरबा ग्राम एवं जावद तहसील में सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किये गये है। जामगोदरानी पहाड़ी

(देवास) में 64 पवन चक्कियाँ एवं रतलाम जिले में सर्वाधिक पवन ऊर्जा संयंत्र स्थापित किये गये है।

खनिज ऊर्जा संसाधन-

ताँबा- बालाघाट, लोहा- जबलपुर, अभ्रक- झाबुआ, हीरा-पन्ना,सतना,छतरपुर, सीमेन्ट-कटनी,सतना व रीवा तथा मैग्नीज- छिंदवाडा एवं बालाघाट।

(B) भारत में सूती वस्त्र उद्योगों के विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर- सूती वस्त्र उद्योग, भारत का सबसे प्राचीन एवं बड़ा उद्योग है। इसकी उत्पति कलकत्ता के निकट फोर्ट ग्लस्टर में 1818 ईस्वी में हुई लेकिन पहली बार भारत की आधुनिक सूती कपड़ा मिल 1854 में बॉम्बे स्पिनिंग एण्ड वीविंग द्वारा स्थानीय पारसी उद्यमी द्वारा की गई।

भारत में सूती वस्त्र उद्योग को 4 क्षेत्रों में विभाजित किया गया है-पश्चिमी क्षेत्र, पूर्वी क्षेत्र, दक्षिणी क्षेत्र एवं उत्तरी क्षेत्र। महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश एवं पश्चिम बंगाल में इस उद्योग की एकाग्रता अधिक है, विशेष रूप से मुम्बई, अहमदाबाद एवं कोयंबटूर। मुम्बई को सूती वस्त्र उद्योग की राजधानी कहा जाता है।

मध्यप्रदेश में इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर, मंदसौर, देवास, नागदा एवं भोपाल प्रमुख उत्पादन केन्द्र है। इंदौर में सूती वस्त्र उद्योग की सबसे अधिक मिलें है।

(C) भारत में अंतर्राज्यीय जलमार्गो की संभावनाओं का परीक्षण कीजिए तथा प्रमुख राष्ट्रीय जल मार्गों का वर्णन कीजिए

(D) भारत के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- ब्रह्मापुत्र घाटी, उत्तरी बिहार तथा निचला पश्चिम बंगाल बाढ़ से बुरी तरह प्रभावित होते है। इसके अलावा बाढ़ से ग्रस्त होने वाले क्षेत्रों की कुछ पेटियाँ इस प्रकार है-

1. नदियों के निचले प्रवाह मार्ग में गाद जमा होने से अपने प्रवाह मार्ग बदल लेती है, जिसके परिणामस्वरूप पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार व पश्चिम बंगाल में बाढ़े आती है।

2. झेलम, चिनाव, व्यास, सतलज, रावी आदि सिंधु की सहायक नदियाँ जम्मू कश्मीर पंजाब एवं हिमाचलप्रदेश बाढ़ों का कारण बनती है।
3. मध्य भारत एवं प्रायद्वीपीय पठार के कुछ क्षेत्रों में नर्मदा, ताप्ती, चंबल, गोदावरी, कृष्णा नदियों द्वारा बाढ़ लाई जाती है।
4. पूर्वी तट के कुछ सुनिश्चित क्षेत्र चक्रवाती तूफानों के कारण बाढ़ प्रवण हो जाते है।

(E) भारतीय द्वीपों की भौगोलिक विशेषताओं का विवरण दीजिए।

उत्तर- भारत में कुल 247 द्वीप है, जिनमें से 204 बंगाल की खाड़ी में तथा शेष 43 अरब सागर में स्थित है। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित एक ऐसा द्वीप समूह है, जो मूलतः विवर्तनिक एवं ज्वालामुखी क्रियाओं से निर्मित हुये है। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की सबसे ऊँची चोटी सेंडल पीक है तथा इस द्वीप समूह का बैरम द्वीप भारत एकमात्र सक्रिय ज्वालीमुखी है। भारत का दक्षिणतम बिन्दु इंदिरा प्वाइंट अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के ग्रेट निकोबार में स्थित है।

भारत के पश्चिम में अरब सागर में स्थित द्वीप समूहों में लक्षद्वीप के नाम से जाना जाता है जिनका निर्माण मूलतः प्रवालों से हुआ है। भारत के समुद्री भाग में स्थित लक्षद्वीप में मिलने वाले इन प्रवाल द्वीपों को एटॉल कहा जाता है यह उच्च जैव विविधता वाले क्षेत्र होते है। कवरत्ती लक्षद्वीप की राजधानी है। यह द्वीप 8^0 चैनल के द्वारा मालद्वीव से अलग होता है।

(F) जेट स्ट्रीम व एल नीनो का मानसून के संदर्भ में विवेचना कीजिए।

उत्तर- जेट स्ट्रीम ऊँचाई पर बहने वाली पछुआ पवनों का रूप है, इसकी गति 150-350 किमी. प्रति घण्टा होती है। यह शीतोष्ण कटबंधीय चक्रवात है, जिसे पश्चिमी विक्षोभ कहा जाता है। ग्रीष्म ऋतु में पश्चिमी जेट स्ट्रीम के उत्तर में खिसकाव से भारतीय उपमहाद्वीप में वृहद निम्न दाब क्षेत्र का निर्माण होता है। इसके कारण अरब सागर के उच्च दाब क्षेत्र से हवायें उत्तर-पूर्व की ओर चलने लगती है जिसे दक्षिण-पश्चिम मानसून की संज्ञा दी जाती है।

एल नीनो पेरू के तट पर चलने वाली एक गर्म जल धारा है इस जल धारा का प्रभाव जब हिन्द महासागर के पूर्वी मध्यवर्ती क्षेत्र में होता है। इससे यहां निम्न दाब क्षेत्र निर्मित होने से यह मानसून को अपनी ओर खींचने लगती है जिससे भारतीय मानसून तुलनात्मक दृष्टि से कमजोर हो जाता है इससे भारतीय उपमहाद्वीप में सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

(G) मीडो मृदा (चारागाहीय मृदा) की विशेषताओं तथा उसके बनने की प्रक्रिया की विवेचना कीजिए।

उत्तर- मीडो मृदा या चारागाहीय मृदा का विकास ऐसे क्षेत्रों में होता है, जहां जल की अधिक मात्रा होती है। अथवा जल भराव की स्थिति हो।

जल भराव की अधिकता के कारण घास के मैदान निर्मित हो जाते है, जोकि पशुओं के चारा के लिये अधिक प्रयोग में आते है। इनमें जीवाश्म की अधिक मात्रा पाई जाती है। क्योंकि जीव-जन्तुओं व वनस्पतियों की अधिकता के कारण इस मृदा का विकास हुआ है।

सवाना(अफ्रीका), कम्पोज(ब्राजील), लानोस (वेनेजुएला एवं कोलंबिया), प्रेयरी(अमेरिका), पम्पास(अर्जेन्टीना), वेल्ड(दक्षिण अफ्रीका), डाउन्स(ऑस्ट्रेलिया), स्टेपीज(एशिया)।

(H) सामान्य पतन दर व रूद्धोष्म दर में अंतर बताइये।

उत्तर- वायुमण्डल में ऊँचाई पर जाने पर तापमान में गिरावट आने लगती है यह गिरावट 6.5^0C प्रति किलोमीटर की दर से होती है। इसमें तापमान के गिरावट में उष्मा का अंश शामिल होता है तथा जैसे-जैसे ऊँचाई पर जाने पर उष्मा में गिरावट आने लगती है वैसे-वैसे तापमान भी कम होने लगता है। जिस दर से तापमान में कमी आती है, उसे ही सामान्य पतन दर कहते है।

वायु ऊपर उठने के साथ-साथ फैलती है। इससे प्रति इकाई आयतन पर उपलब्ध उष्मा घटती जाती है और तापमान गिरने लगता है इस तापमान

परिवर्तन में उष्मा का कोई अंश शामिल नहीं होता और वायु का शीतलन आरोहण एवं विस्तारण के माध्यम से होता है। इसे ही रूद्धोष्म परिवर्तन कहते है।

(I) बघेलखण्ड क्षेत्र के उच्चावच तथा स्थालाकृति का वर्णन करें।

उत्तर- बघेलखण्ड के पठार का विस्तार राज्य के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में हुआ है। इसके उत्तर में उत्तरप्रदेश, पूर्व में बिहार तथा दक्षिण-पूर्व में छतीसगढ़ राज्य स्थित है। मध्यप्रदेश में इसका विस्तार सीधी, शहडोल, सिंगरौली, अनूपपुर व उमरिया जिलों में है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह राज्य का सबसे छोटा पठार(7%) है।

बघेलखण्ड पठार का निर्माण आर्कियन काल से देखकर जुरैसिक काल तक के शैल समूहों से हुआ। इसकी स्थालाकृति के उच्चावच में अनेक भिन्नता है। इस पठारी भाग में गोंडवाना क्रम की चट्टानें अधिक है इसी कारण इस क्षेत्र में कोयले के निक्षेप अधिक पाये जाते है। सिंगरौली कोयला क्षेत्र मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है। इस पठारी भाग में सोन, रिहन्द तथा गोपद आदि नदियां प्रवाहित होती है।

(J) सिंधु नदी तंत्र का वर्णन करें।

उत्तर- सिंधु नदी का उद्गम तिब्बत में स्थित मानसरोवर झील के चेमयांगडुंग ग्लेशियर से होता है इसकी कुल लम्बाई 2880 किमी. है। सिंधु में दायीं ओर से मिलने वाली नदियों में श्योक, काबुल, कुर्रम आदि है। जबकि बायीं ओर से झेलम, चिनाव, रावी, व्यास और सतलज आदि सहायक नदियाँ मिलती है।

नदी	उद्गम	मुहाना	विशेष
झेलम	कश्मीर के वेरीनाग के निकट शेषनाग झील।	चिनाब नदी(पाकिस्तान में)	यह नदी श्रीनगर के निकट वूलर झील से प्रवाहित होती है।
चिनाब	बडालाचा दर्रा (हिमाचलप्रदेश)	सिंधु नदी (पाकिस्तान में)	चंद्रा और भागा नाम की दो सरिताओं का मिलन

रावी	रोहतांग दर्रा (कांगड़ा जिला)	चिनाब नदी (पाकिस्तान में)	यह नदी धौलाधार और पीरपंजाल श्रेणियों का जल बहाकर ले जाती है।
व्यास	व्यासकुण्ड़ (रोहतांग दर्रा)	सतलज नदी	यह नदी कपूरथला के निकट हरिकेबैराज का निर्माण करती है।
सतलज	मानसरोवर के निकट राकसताल	चिनाब नदी (पाकिस्तान में)	प्रसिद्ध भाखड़ानागल बाँध इसी नदी पर है।

(K) भारत के हॉटस्पॉट क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- हॉटस्पॉट वे क्षेत्र होते है, जहां की जैव विविधिता अधिक होती है। हॉटस्पॉट में उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया जाता है जहां जीव-जन्तुओं व पादपों की 1500 प्रजातियों की स्थानिकता हो एवं 70 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त या नष्ट हो चुकी है।

विश्व में हॉटस्पॉटों की संख्या वर्तमान में 37 है जबकि भारत में 4 हॉटस्पॉट क्षेत्र है। जिनमें दो हॉटस्पॉट क्षेत्र भारत की भौगोलिक सीमा के अधीन है जबकि शेष दो क्षेत्र भारत के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों की सीमा में समाविष्ट है।

भारत के चार हॉटस्पॉट निम्नलिखित है-

1. पश्चिमी घाट- यहां सबसे अधिक जैव विविधिता पाई जाती है।
2. हिमालय क्षेत्र- यह भारत का सबसे बड़ा हॉटस्पॉट क्षेत्र है।
3. इंडोवर्मन- इसका विस्तार भारत के अतिरिक्त म्यांमार में है।
4. सुंदरी से अंडमान-निकोबार- इसका विस्तार भारत के अतिरिक्त थाईलैंड, इंडोनेशिया व मलेशिया तक है।

(L) भारत की जलवायु पर पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव का वर्णन कीजिए।

उत्तर- पश्चिमी विक्षोभ उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में नहीं, मध्य अक्षांश क्षेत्र(कर्क रेखा के उत्तर में) में विकसित होता है। इसलिए इन्हें 'मध्य अक्षांश तूफान' या 'अतिरिक्त उष्णकटिबंधीय तूफान' कहते है। पश्चिमी विक्षोभ निम्न दाब प्रणाली है जो पश्चिमी हवाओं में एम्बेडेड होती है जो पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है।

भारत की जलवायु पर पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव निम्नलिखित है–

1. भारत में होने वाली कुल वर्षा का 10 प्रतिशत पश्चिमी विक्षोभ के कारण होती है।
2. उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में इससे वर्षा व बर्फपात होती है।
3. इससे होने वाली वर्षा रबी की फसलों के लिये महत्वपूर्ण होती है। जैसे- गेहूँ।
4. मध्यप्रदेश के उत्तर-पश्चिमी जिलों में भी इससे कुछ वर्षा प्राप्त होती है जिसे **मावठ** कहा जाता है।
5. इसके उत्तर में खिसकाव से ही दक्षिण-पश्चिम मानसून का मार्ग प्रशस्त होता है।

3. प्रश्न क्रमांक 03 में कुल 5 प्रश्न दिये गये है, प्रत्येक का उत्तर लगभग 300 शब्दों में होना चाहिए कुल 03 प्रश्नों का उत्तर देना होगा।

15*3 = 45

(A) आपदा प्रबंधन के संस्थागत संगठन एवं आधारभूत प्राधार(ढ़ांचा नीति) का वर्णन कीजिए।

उत्तर- भारत अपनी भौगोलिक संरचना के कारण बाढ़, सूखा, सुनामी, चक्रवात जैसी आपदाओं का संवेदनशील क्षेत्र रहा है। कुछ समय पूर्व तक भारत में संस्थागत संगठनों एवं नीतियों का फोकस आपदोपरान्त प्रबंधन अर्थात राहत एवं पुनर्वास तक ही सीमित था परन्तु 2004 की सुनामी के बाद इसमें व्यापक परिवर्तन हुआ। भारत अब आपदा प्रबंधन के आपदा पूर्व पक्षो पर अधिक जोर देता है अर्थात आपदा तैयारी, पूर्व चेतावनी, आपदा न्यूनीकरण तथा आपदा रोकथाम पर अधिक ध्यान दिया जाता हैं।

आपदा प्रबंधन के राष्ट्रीय संगठन-

1. **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण(NDMA)-** यह देश में आपदा प्रबंधन का शीर्ष निकाय है। जो सभी प्रकार की प्राकृतिक तथा मानवजनित आपदाओं से निपटने के लिये अधिकृत है इसका अध्यक्ष प्रधानमंत्री होता है। इस प्राधिकरण के कार्यो में सहायता के लिये एक राष्ट्रीय कार्यकारी समिति का प्रावधान किया गया है जिसका अध्यक्ष केन्द्रीय ग्रह सचिव होता है।

2. **राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण(SDMA)–** राज्य स्तर पर मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में यह राज्य में आपदा प्रबंधन के लिये नीतियां और योजनाऐं निर्धारित करता है यह NDMA द्वारा निर्धारित दिशा निर्देशों के अनुसार कार्य करता है।
3. **जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण(DDMA)–** यह जिला स्तर पर आपदा प्रबंधन के लिये योजना, समन्वय और कार्यान्वय निकाय के रूप में कार्य करता है इसका अध्यक्ष जिला कलेक्टर तथा स्थानीय प्राधिकरण का निर्वाचित प्रतिनिधि सह-अध्यक्ष होता है।

राष्ट्रीय आपदा कार्यवाही बल(NDRF)– राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के अन्तर्गत NDRF का गठन किया गया इसका अधीक्षण, निर्देशन तथा नियंत्रण NDMA द्वारा किया जाता है। इस समय NDRF में आठ बटालियन शामिल है।

आपदा प्रबंधन पर राष्ट्रीय नीति- 2005 को भारत द्वारा लाये गये "आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005" द्वारा आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में समग्र एवं समन्वित दृष्टिकोण अपनाया गया। आपदा प्रबंधन की राष्ट्रीय नीति के निम्नलिखित पहलु है-

1. आपदा न्यूनीकरण, आपदा तैयारी एवं आपदा रोकथाम के लिये एक परिपूर्ण उपागम अपनाना।
2. संस्थागत संरचना के निर्माण एवं आपदा प्रबंधन हेतु समुचित प्रशिक्षण देना।
3. केन्द्र, राज्य एवं जिला स्तर पर आपदा प्रबंधन योजनाओं का निर्माण करना।
4. भारतीय मानकों के अनुसार भवन निर्माण का अनुपालन करना।
5. राष्ट्रीय स्तर पर आपदा न्यूनीकरण एवं आपदा तैयारी के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय बढ़ावा देना।

(B) भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों तथा उनमें पाये जाने वाले उद्योगों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर- मध्यप्रदेश भौगोलिक दृष्टि से भारत के मध्य में स्थित है। इस कारण यह औद्योगिक दृष्टि से अनुकूल हो जाता है। औद्योगिक दृष्टि से मध्यप्रदेश का पश्चिमी भाग अधिक संपन्न है। लेकिन शेष मध्यप्रदेश में भी विभिन्न उद्योग स्थापित किये गये है।

राज्य के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र-

इंदौर- फार्मास्युटिक, वस्त्र, खाद्यप्रसंस्करण, आईटी
भोपाल- अभियांत्रिकी, वस्त्र, बायोटेक, हर्बल, खाद्यप्रसंस्करण
सागर- खनिज, पत्थर, स्टेनलेसस्टील
ग्वालियर- इलेक्ट्रॉनिक, अभियांत्रिकी, आईटी, माचिस उद्योग
जबलपुर- वस्त्र , खनिज, पत्थर आदि।
रीवा- खनिज, सीमेन्ट।

मध्यप्रदेश के कृषि आधारित उद्योग-

1. चीनी उद्योग- मध्यप्रदेश में प्रथम चीनी मिल की स्थापना वर्ष 1934 में जावरा (रतलाम) में की गई। भोपाल शुगर मिल(सीहोर), बरलाई शुगर मिल (देवास), डबरा शुगर मिल एवं सेठ गोविंददास शुगर मिल(उज्जैन) प्रमुख चीनी मिल है।
2. सूती वस्त्र उद्योग- सूती वस्त्र उद्योग की प्रथम सफल मिल मालवा मिल 1907 में स्थापित की गई। मध्यप्रदेश में सूती वस्त्र की सर्वाधिक मिलें इंदौर में है इसलिए इंदौर को सूती वस्त्र का केन्द्र कहा जाता है।
3. रेशम उद्योग- मध्यप्रदेश में मण्डला प्रमुख रेशम उत्पादक क्षेत्र है। इरी रेशम के उत्पादन एवं कारखानों के कारण सिवनी को मध्यप्रदेश का लखनऊ कहा जाता है।

वन आधारित उद्योग-

1. कागज उद्योग- नेपानगर(बुरहानपुर) में नेशनल न्यूजप्रिंट एण्ड पेपर मिल व होशंगाबाद में सिक्योरिटी पेपर मिल तथा देवास में बैंक नोट प्रेस की स्थापना की गई है।
2. बीड़ी उद्योग- इसमें तेंदूपत्ते का प्रयोग होता है। जबलपुर, सागर, कटनी, दमोह आदि प्रमुख इसके क्षेत्र है।
3. कत्था उद्योग- राज्य के शिवपुरी तथा बानमौर में कत्था निर्माण के सरकारी कारखानों स्थापित किये है।

खनिज आधारित उद्योग-

1. चीनी मिट्टी उद्योग- ग्वालियर, जबलपुर, रतलाम आदि क्षेत्रों में चीनी मिट्टी के बर्तन बनाये जाते है।

2. सीमेन्ट उद्योग- रीवा, जबलपुर, सतना, दमोह आदि जिलों में यह उद्योग केन्द्रित है।
3. चूना उद्योग- यह उद्योग मुख्यतः कटनी में केन्द्रित है।

(C) विश्व में विभिन्न प्रकार के पाये जाने वाले वनों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- विश्व में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के वन निम्नलिखित है-

1. आर्द्र उष्णकटिबंधीय वन- ये वन प्रायः 250 सेमी. से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाते है। सर्वाधिक श्रेष्ठ सदाबहार वन अल्पशुष्क मौसम तथा 300 सेमी अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाते है। ये अत्यधिक घने जंगल है। यहां बेंत, रोजवुड, फर्न, बांस तथा तार आदि वृक्ष पाये जाते है। इन वनों से प्राप्त होने वाली इमारती लकड़ी श्रेष्ठ तथा टिकाऊ किश्म की होती है।

2. शुष्क उष्णकटिबंधीय प्रकार- इस प्रकार की वनस्पति लगभग 100 सेमी वर्षा वाले क्षेत्रों में पाई जाती है। इस प्रकार की वनस्पतियों के विस्तृत क्षेत्र को कृषि कार्य हेतु साफ कर दिया जाता है। इसमें नीम, शीशम, बबूल, बांस, पीपल, खैर आदि वनस्पतियां पाई जाती है।

3. पर्वतीय उष्णकटिबंधीय तथा शीतोष्णकटिबंधीय प्रकार- इस प्रकार की वनस्पति दक्षिण भारत में नीलगिरी एवं पालनी की पहाड़ियों पर 1500 मीटर की ऊँचाई तक, साहिद्री की ऊपरी ढ़ालों पर पाई जाती है। मोगनोलिया, लोरेल, एल्म इन वनों में पाये जाने वाले प्रमुख वृक्ष है।

4. पर्वतीय प्रकार- हिमालयी वनस्पतियों में ऊँचाई अभिमुक्ता तथा अक्षांश के अनुसार परिवर्तन होता रहता है इसके परिणामस्वरूप निचली एवं ऊपरी ढ़ालों पर भिन्न प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती है। यहां चौड़ी पत्ती वाले शंकुधारी वृक्ष पाये जाते है।

5. टैगा वन- ये सदाबहार वन है। इन वनों के वृक्ष की पत्तियां नुकीली होती है।

6. टुण्ड्रा वन- बर्फ से ढका रहता है गर्मी में यहां मांस तथा लाइकेन उगते है।

7. विषुवतीय रेखीय वन- इन वनों में वृक्ष और झाड़ियों का मिश्रण होता है। जैतून, कॉर्क तथा ओक यहां के प्रमुख मुख्य वृक्ष है।

अतः स्पष्ट है, कि विश्व में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक स्थितियां, जलवायु, वर्षा आदि विशेषताऐं वनस्पतियों को प्रभावित करती है। वर्तमान में जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारण वनस्पतियों का कम होना है। अतः आवश्यकता है कि जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर वायुमण्डलीय समस्या से निपटने हेतु वृक्षारोपण व वनाच्छादन को अधिक से अधिक प्रोत्साहन दिया जाये।

(D) मध्यप्रदेश के कृषि जलवायु प्रदेशों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- भौगोलिक व जलवायु विविधता के कारण राज्य को किसी एक कृषि जलवायु क्षेत्र के अन्तर्गत रखना संभव नही है। पृथक भौगोलिक दशाऐं भिन्न-भिन्न प्रकृति की फसलों के अनुकूल होती है, इसलिये इन्हें विशिष्ट कृषि जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।

मध्यप्रदेश को 11 कृषि जलवायु क्षेत्र में विभाजित किया गया है-

1. **छत्तीसगढ़ का मैदान-**
   फसल क्षेत्र- धान।
   मृदा-लाल एवं पीली।
   वर्षा- 120-160 सेमी.।
   जिले- बालाघाट।
   कृषि उत्पादन- रेशम उद्योग व संकर सब्जी।
2. **छत्तीसगढ़ के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र-**

फसल क्षेत्र- धान।
मृदा-लाल एवं पीली।
वर्षा- 120-160 सेमी.।
जिले- शहडोल, मण्डला।
कृषि उत्पादन- वर्षा आधारित कृषि उद्यानिकी, हल्दी।

3. **कैमूर का पहाड़ तथा सतपुड़ा की पहाड़ी-**
फसल क्षेत्र- गेहूँ-धान।
मृदा-मिश्रित, लाल एवं काली।
वर्षा- 100-140 सेमी.।
जिले- रीवा, सतना, पन्ना, कटनी, जबलपुर, सीधी।
कृषि उत्पादन- आम, अमरूद, कटहल।

4. **मध्य नर्मदा घाटी-**
फसल क्षेत्र- गेहूँ।
मृदा-गहरी काली।
वर्षा- 120-160 सेमी.।
जिले- नरसिंहपुर, होशंगाबाद,सीहोर और रायसेन।
कृषि उत्पादन- गन्ना, अमरूद, तरबूज।

5. **विंध्य का पठार-**
फसल क्षेत्र- गेहूँ।
मृदा-मध्यम से गहरी काली।
वर्षा- 120-140 सेमी.।
जिले- भोपाल, रायसेन,सागर, दमोह, गुना, विदिशा।
कृषि उत्पादन- मसाले, संतरा, अनार, गेहूँ, चना।

6. **मध्य क्षेत्र-**
फसल क्षेत्र- गेहूँ-ज्वार।

मृदा–हल्का जलोढ़।
वर्षा- 80-100 सेमी.।
जिले- ग्वालियर, भिण्ड़, मुरैना, शिवपुरी, गुना।
कृषि उत्पादन- तिलहन, मूँगफली, धनिया।

7. **बुंदेलखण्ड-**
फसल क्षेत्र- गेहूँ-ज्वार।
मृदा- मिश्रित लाल एवं काली।
वर्षा- 80-140 सेमी.।
जिले- छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया।
कृषि उत्पादन- तिल, हल्दी, सिंघाडा।

8. **सतपुड़ा का पठार-**
फसल क्षेत्र- गेहूँ-ज्वार।
मृदा-हल्का काला।
वर्षा- 10-120 सेमी.।
जिले- बैतूल, छिंदवाड़ा।
कृषि उत्पादन- संतरा, कपास, मशरूम।

9. **मालवा का पठार-**
फसल क्षेत्र- धान।
मृदा-लाल एवं पीली।
वर्षा- 80-120 सेमी.।
जिले- मंदसौर, नीमच, रतलाम,उज्जैन, देवास, झाबुआ।
कृषि उत्पादन- संतरा,अंगूर, गेहूँ, अदरक, प्याज।

10. **निमाड़ का मैदान-**
फसल क्षेत्र- कपास-ज्वार।
मृदा-मध्यम काली।

वर्षा- 80-100 सेमी.।

जिले- खण्डवा, खरगोन, हरदा, धार, बुरहानपुर।

कृषि उत्पादन- चीकू, अनार, मिर्च, केला।

11. **झाबुआ की पहाड़ी-**

फसल क्षेत्र- कपास-ज्वार।

मृदा- मध्यम से कम काली।

वर्षा- 80-100 सेमी.।

जिले- झाबुआ, अलीराजपुर, धार।

कृषि उत्पादन- टमाटर, अनार, मक्का ज्वार।

(E) यद्यपि भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है, नगरीय नियोजन भारत के विकास में निर्णायक हैं

उत्तर- भारत की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। एवं शेष 30 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में आवासित है तथा नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विकास एवं दोनों में तारतम्य स्थापित करने के लिये सरकार को प्रभावी नीतियों एवं योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन सुनिश्चित करना चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने एवं प्रशासनिक व्यवस्था को दुरूस्त करने हेतु पंचायती राज संस्थाओं का प्रावधान भारतीय संविधान में किया गया है। भारतीय संविधान में राज्य के नीति-निदेशक तत्वों के अंतर्गत अनुच्छेद 40 में ग्राम पंचायतों के गठन की व्यवस्था का प्रावधान किया गया है। अतः राज्य सरकार का यह कर्तव्य होगा कि वह ग्रामीण लोगों को राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक न्याय सुलभ करने एवं लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु पंचायती राज संस्थाओं का गठन जिससे समाज के पिछड़े वर्ग के अन्तिम व्यक्ति तक विकासोन्मुखी योजनाओं की पहुँच सुनिश्चित की जा सके। पंचायती राज संस्थाओं को कानूनी या संवैधानिक अमलीजामा पहनाने के लिये सन् 1992 में 73वां संविधान संशोधन

अधिनियम पारित किया गया। जिससे लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण एवं राजनीतिक अधिकार सुनिश्चित किये जा सके।

जैसा हम जानते है, कि नगरीय क्षेत्रों में 30 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। पंचायती राज संस्थाओं की तरह ही नगरीय लोगों को राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक न्याय सुलभ करने एवं लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की व्यवस्था को सुनिश्चित करने हेतु वर्ष 1992 में 74वां संविधान संशोधन अधिनियम पारित किया गया एवं नगरीय क्षेत्रों में त्रिस्तरीय नगरीय नियोजन प्रशासन व्यवस्था को अमलीजामा पहनाया गया।

उल्लेखनीय है, कि 70 प्रतिशत जनसंख्या के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने बावजूद नगरीय क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में कम विकास हुआ है। जिसमें कई महत्वपूर्ण समस्याओं को जन्म दिया है। जैसे- ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर पलायन, नगरीकरण, नगरीय संसाधनों पर दबाव आदि। अतः आवश्यकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अवसंरचनात्मक विकास को सुनिश्चित किया जाये जिससे ग्रामीण एवं नगरीय नियोजन व्यवस्था में संतुलन स्थापित हो सके।